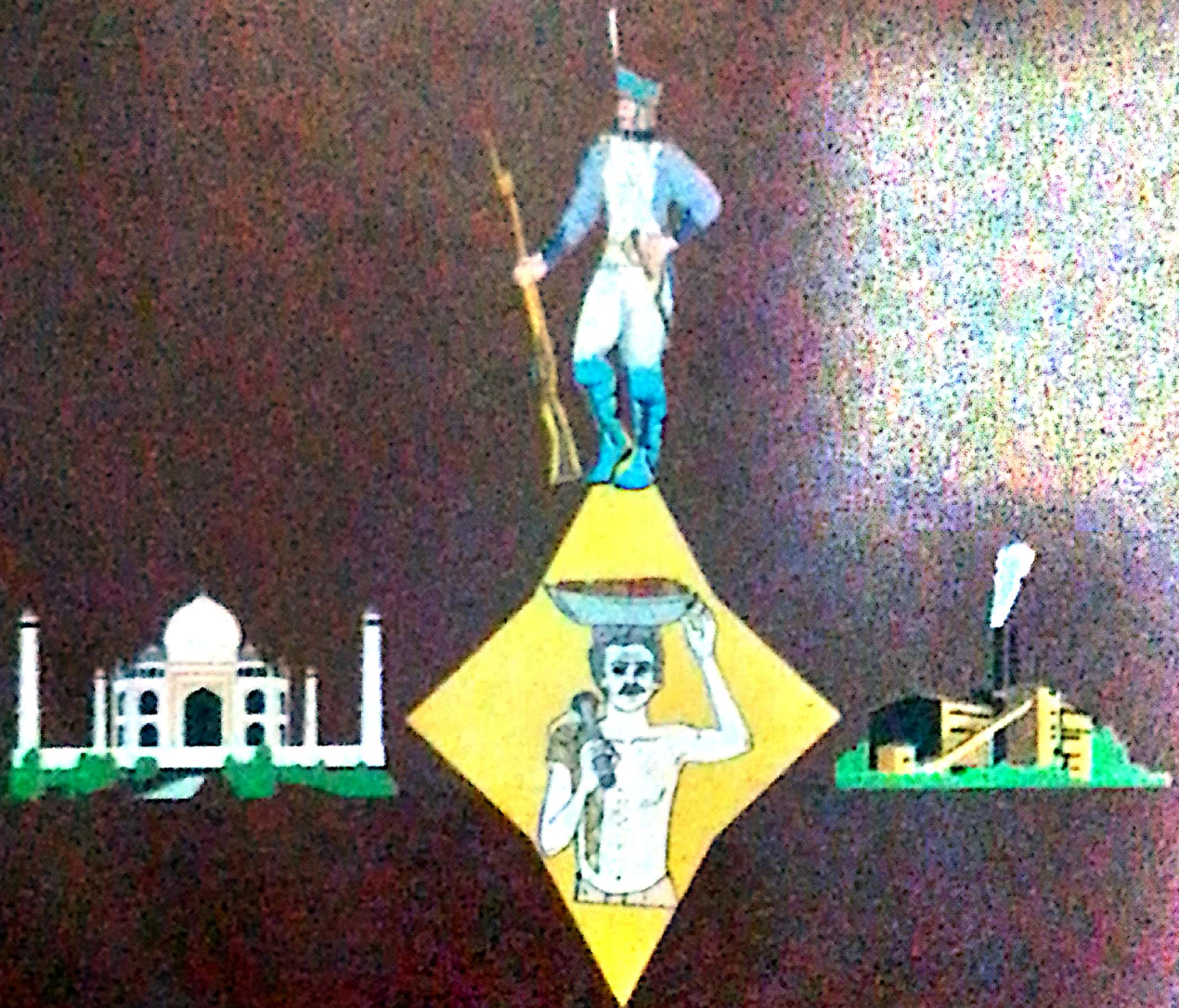


पश्चीना बीजाबा है



श्रम है ज्ञान श्रमिक ज्ञानी है
युग परिभाषा जानो
शब्द कोश सब बदल गये हैं
हम माने तुम मानो ।

निर्मल चन्द 'निर्मल'

पक्षीना ओलता है (काव्य संग्रह)

प्रकाशक :

ऐन्डी पब्लिकेशन,

91, गौतम नगर, पश्चिम निशादपुरा

भोपाल, फोन - 9300687437

प्रथम संस्करण :

वर्ष - 2008

सर्वाधिकार :

ऐन्डी पब्लिकेशन

मूल्य : 75 रु मात्र

मुद्रक : ऐन्डी पब्लिकेशन

सूची

1	धरती के आसरे पै टिका आसमान है	1
2	उम्र भर गंगा नहाते	2
3	पारस के हाथ बढे	4
4	कहेंगे हम तो श्रम वरदानी	5
5	श्रम का मान बढाओ रे	7
6	पसीना बोलता है	8
7	अनुभूति प्रेम की होन दें	10
8	इन्तजार की नजरें	12
9	चेतना ही चेतना है	14
10	धरा सुवासित होगी	15
11	बुन्देलखण्ड में प्रभात	16
12	गीत का जन्म	17
13	धरती की गोद हरी होवे	19
14	निर्वल किस्मत पर रहते हैं	22
15	रिक्शेवाला	24
16	कितने ही उजयारे दिये	25
17	अपने युग का नाम करें	27
18	बसुधा नीरानीर हुई	29
19	फिर बसन्त आ गया	31
20	गीत लिखो तो ऐसा लिखना	33
21	मैं ताजमहल यमुना तट का	35
22	समूचा यान तेरा है	39
23	वनने में वर्षों लगते हैं	41
24	कुछ तो काम करें	43
25	साँस नहीं टूटी है	45
26	हँस चुगेगा मोती	47
27	प्रकृति में प्रभात	49
28	झुकना नहीं तकरार करना	50

29	ये कलम चलेगी उस क्षण तक	51
30	वैसे सुर में हम गायेंगे	53
31	मैं लोकतंत्र हूँ	55
32	घर मेरा हरिद्वार हो गया	56
33	सारा देश पुकारे माझी	58
34	कैसे कह दें अपना देश महान	60
35	कविता देती पंख उड़ाने भरने को	62
36	विगत से ध्यान नहीं हटता है	65
37	मिलने तो आओगे	66
38	ऐसा क्यों होता है	68
39	जब तक मैं जिन्दा हूँ	70
40	पीड़ा और खुशी	71
41	खाली हाथ	72
42	एक क्षण	72
43	घर - 1	73
44	घर - 2	73
45	उड़ना लाजमी है	74
46	जैसा खाओगे अन्न	75
47	आदमी थका नहीं है	76
48	आम आदमी की बात	78
49	साँस-साँस में स्पन्दन है	79
50	बच्चों की फुलवारी	81
51	चन्दा भैया	82
52	गया जी हम नहायेंगे	84
53	सदा फासले मिले	85
54	जब हर्फ-हर्फ पढ़ लिया	86
55	झटका है करारा हमको	87
56	जमाना से बताता है	88
57	एक दिन खुशियाँ भी लाता है	89
58	ऋण तो अदा करो	90
59	वर्तमान को मत कुचलो	91
60	सामयिक दोहे	

नाम - निर्मल चन्द 'निर्मल'

जन्म - 6 मार्च 1931, चकराघाट, सागर (म.प्र.)

पूर्व प्रकाशित काव्य कृतियाँ

1. उठाओ कुदाली
2. और कुछ नहीं हुआ
3. गीत वही लिख पाता है
4. गीत है ये जिन्दगी
5. कुछ ऐसे लोग हुआ करते
6. याद नहीं बिसरी
7. जुगनुओं के पास भी ईमान है
8. प्रीत के सुख - दुख घनेरे

विशेष - श्री दिग्विजय सिंह द्वारा दाजी सम्मान, आल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन की तरफ से श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा तथा श्री राहुल भैया के द्वारा सम्मानित। दिव्य रजत अलंकरण सम्मान। मध्यप्रदेश लेखक संघ भोपाल की ओर से सारस्वत सम्मान। इनके अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक और सामाजिक संगठनों द्वारा साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित। रेडियो एवं टी.व्ही. से संबद्ध।



नाम - निर्मल चन्द निर्मल

जन्म - 6 मार्च 1931, चकराघाट, सागर (म.प्र.)

पूर्व प्रकाशित काव्य कृतियाँ

1. उठाओ कुदाली
2. और कुछ नहीं हुआ
3. गीत यही लिख पाता है
4. गीत है ये जिन्दगी
5. कुछ ऐसे लोग हुआ करते
6. याद नहीं बिसरी
7. जुगनुओं के पास भी ईमान है
8. प्रीत के सुख - दुख घनेरे

विशेष - श्री दिग्विजय सिंह द्वारा दाजी सम्मान, आल इंडिया स्टूडेन्ट्स फेडरेशन की तरफ से श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा तथा श्री राहुल भैया के द्वारा सम्मानित। दिव्य रजत अलंकरण सम्मान। मध्यप्रदेश लेखक संघ भोपाल की ओर से सारस्वत सम्मान। इनके अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक और सामाजिक संगठनों द्वारा साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित। रेडियो एवं टी.व्ही. से संबद्ध।